

॥ स्वामिश्री ॥



साधु हृदयनी प्रार्थनागंगा

हे प्रभु परम !

आप सहजानंद रूपे आ ब्रह्मांडे पधार्या
अनादि अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदने साथे लाव्या
हेतु तेओ आपना स्वरूपनुं यथार्थ दर्शन करावे
आप जेओने मज्या-संबंध दीधो ते सौ न्याल थयां
ते संबंध शाश्वतकाण सुधी चैतन्योने मणतो रहे
ते हेतु आप मानवदेहे प्रगट रहेशो ते कोल दीधा
आज पर्यंत ते दिव्य दर्शन तेवां सौने कराव्यां
शाश्वतकाण सुधी ते करावता ज रहेशो ते भातरी थई
तेवां भाग्यवान सौ आपना स्वरूपने ओणजे
कर्तारता माने ने प्रेरक प्रवर्तक माने ते हेतु...
आजे अमने संतभगवंत साहेबजामां ते मनावो छो
जे जे माने ते सौ सुभी सुभी थाय छे... थई गयां छे
'रही सही कसर अमे टाणीशुं'...
ते आपनुं वरदान छे... अमे मानीअे छीअे

तेमां कसर होय तो आप मनावजे !

'साहेबज' आपनुं ज साकार स्वरूप

सर्वमां व्याप्त... प्रेरक... प्रवर्तक... कल्याणदाता

ते मारामां तेवा ज सौ आ दिव्य चैतन्योमां

ते जेवा आ सौमां मनाय तेवा मारामां विलसे

आ परम सत्य पूर्ण स्वरूपे स्वीकारवा ज छे.

नूतन वर्षे आ अम सौनो संकल्प छे.

मन-बुद्धिमां ते स्वीकारीने ज जंपवुं

कंई पाण कसर टाणीने ज रहवुं

आप जर ते संकल्प पूरो करशो ते मानी ज लेवुं

ते नूतनवर्षनो संकल्प पूर्ण करो...

'साहेबज'ना स्वरूपमां अमने ओगाणो... शून्य करो

सर्वत्र सर्वमां 'साहेबज'नां दिव्य दर्शन करावो

अमारी प्रार्थना आपे स्वीकारी

ते मानी जववा बण दो छो ते मनावो !

साधु शिवाजीदासना वय स्वामिनारायण.

२६.१०.२०२१, ब्रह्मज्योति